ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

कनौज के गहरवार शासकों के चौहान शासकों से सम्बन्ध- पृथ्वीराज के विशेष सम्बन्ध में

DR. SOMESH KUMAR SINGH

DEPT. OF HISTORY, SCRS GOVT. COLLEGE, SAWAI MADHOPUR, RAJASTHAN, INDIA

सार

कनौज के गहरवार वंशी जो कि राठौर वंश की ही शाखा मानी जाती है; राजा जयचंद के दादा का नाम गोविंदचंद, पिता का नाम विजयचंद था और इनका शासन काल ११७० से ११९४ ईसा पूर्व तक बताया जाता है। इनके समकालीन राजाओं में पृथ्वीराज चौहान सबसे प्रमुख हैं। राजा जयचंद ना केवल कन्नौज बल्कि काशी नरेश भी कहलाते हैं।

परिचय

जयचंद्र गाहरवाल(1170–1194 ई) उत्तर भारत के गाहड़वाल वंश के राजा थे। उन्होंने गंगा नदी के पास में बसे कान्यकुब्ज और वाराणसी सहित अंटारवेदी देश पर शासन किया। आज के उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ भागों पर राज किया था गाहड़वाल वंश के अंतिम शक्तिशाली राजा थे।[1,2]

विद्यापति के पुरुष-परीक्षा और पृथ्वीराज रासो जैसे हिन्दू स्रोतों के अनुसार ,जयचंद्र ने ग़ोरी को कई बार हराया। जयचंद्र कोई गद्दार नहीं थें, वह अपनी अंतिम सास तक मोहम्मद ग़ोरी के कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा नेतृत्व सेना के खिलाफ लड़ते रहे लेकिन आखिरकार वह 1194 ई मे चंदावर की लड़ाई मे पराजित हो गए, लेकिन उनके हार के बाद भी उनके बेटे हरिश्चंद्र ने मोहम्मद ग़ोरी को हराया और वाराणसी में मुसलमानों ने जितने भी घाट और मंदिर तोड़े थे वह सब वापस बनवाया।

ऐसे कोई प्रमाण नहीं हैं जिससे पता लगे कि जयचन्द ने ग़ोरी की सहायता की थी। ग़ोरी को बुलाने वाले देश द्रोही तो दूसरे ही थे, जिनके नाम पृथ्वीराज रासो में अंकित हैं। इसी प्रकार समकालीन फारसी ग्रन्थों में भी इस बात का संकेत तक नहीं है कि जयचन्द ने गोरी को आमन्त्रित किया था। यह एक सुनी-सुनाई बात है जो एक रूढ़ि बन गई है। पृथ्वीराज तथा संयोगिता विवाह को इतिहासकार सत्य नही मानते।

कनौज के पृथ्वीराज तृतीय (शासनकाल: 1178–1192) जिन्हें आम तौर पर पृथ्वीराज चौहान कहा जाता है,[1]चौहान वंश के राजा थे। उन्होंने वर्तमान उत्तर-पश्चिमी भारत में पारम्परिक चौहान क्षेत्र सपादलक्ष पर शासन किया। उन्होंने वर्तमान राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से पर भी नियन्त्रण किया। उनकी राजधानी अजयमेरु (आधुनिक अजमेर) में स्थित थी, हालाँकि मध्ययुगीन लोक किंवदन्तियों ने उन्हें भारत के राजनीतिक केंद्र दिल्ली के राजा के रूप में वर्णित किया है जो उन्हें पूर्व-इस्लामी भारतीय शक्ति के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित करते हैं।

शुरुआत में पृथ्वीराज ने कई पड़ोसी हिन्दू राज्यों के खिलाफ़ सैन्य सफलता हासिल की। विशेष रूप से वह चन्देल राजा परमर्दिदेव के ख़िलाफ़ सफल रहे थे। उन्होंने ग़ौरी राजवंश के शासक मोहम्मद ग़ौरी के प्रारम्भिक आक्रमण को भी रोका। हालाँकि, 1192 में तराइन की दूसरी लड़ाई में ग़ौरी ने पृथ्वीराज को हराया और कुछ ही समय बाद उन्हें मार डाला। तराइन में उनकी हार को भारत की इस्लामी विजय में एक ऐतिहासिक घटना के रूप में देखा जाता है और कई अर्ध-पौराणिक लेखनों में इसका वर्णन किया गया है। इनमें सबसे लोकप्रिय पृथ्वीराज रासो है, जो उन्हें "राजपूत" राजा के रूप में प्रस्तुत करता है।[2]

जानकारी के स्रोत

पृथ्वीराज के शासनकाल के दौरान के शिलालेख संख्या में कम हैं और स्वयं राजा द्वारा जारी नहीं किए गए हैं।[3] उनके बारे में अधिकांश जानकारी मध्ययुगीन पौराणिक वृत्तान्तों से आती है। तराइन की लड़ाई के मुसलमान खातों के अलावा हिन्दू और जैन लेखकों द्वारा कई मध्ययुगीन महाकाव्य में उनका उल्लेख किया गया है। इनमें पृथ्वीराज विजय, हम्मीर महावाक्य और पृथ्वीराज रासो शामिल हैं। इन ग्रन्थों में स्तुतिपूर्ण सम्बन्धी विवरण हैं और इसलिए यह पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं हैं।[4] पृथ्वीराज विजय पृथ्वीराज के शासनकाल से एकमात्र जीवित साहित्यिक पाठ है। पृथ्वीराज रासो जिसने पृथ्वीराज को एक महान राजा के रूप में लोकप्रिय किया को राजा के दरबारी कवि चंद बरदाई द्वारा लिखा कहा जाता है। हालांकि, यह अतिरंजित लेखनों से भरा है[3,4] जिनमें से कई इतिहास के उद्देश्यों के लिए बेकार हैं।[4]

कनौज के पृथ्वीराज का उल्लेख करने वाले अन्य वृत्तान्त और ग्रन्थों में प्रबन्ध चिन्तामणि, प्रबन्ध कोष और पृथ्वीराज प्रबन्ध शामिल हैं। उनकी मृत्यु के सदियों बाद इनकी रचना की गई थी और इसमें अतिशयोक्ति और काल दोष वाले उपाख्यान हैं।[4] पृथ्वीराज का उल्लेख जैनों की एक पट्टावली में भी किया गया है जो एक संस्कृत ग्रन्थ है। इसमें जैन भिक्षुओं की जीवनी है। जबकि इसे 1336 में पूरा कर लिया था लेकिन जिस हिस्से में पृथ्वीराज का उल्लेख है वह 1250 के आसपास लिखा गया था। चन्देला कवि जगनिका का आल्हा-खण्ड (या आल्हा रासो) भी चन्देलों के खिलाफ पृथ्वीराज के युद्ध का अतिरंजित वर्णन प्रदान करता है।[5]

प्रारंभिक जीवन

जयचंद्र गाहड़वाल राजपूत राजा विजयचंद्र के पुत्र थे। एक कमौली शिलालेख के अनुसार, उन्हें 21 जून 1170 ईस्वी को राजमुकुट पहनाया गया था।[2] जयचंद्र को अपने दादा गोविंदचंद्र के शाही खिताब विरासत में मिले:[2] अश्वपति नरपति गजपति राजत्रयाधिपति[3]) तथा विदेह-विद्या-विचारा-वाचस्पति[4]).

सैन्य वृत्ति

जयचंद्र के शिलालेख पारंपरिक भव्यता का उपयोग करते हुए उनकी प्रशंसा करते हैं, लेकिन राजा की किसी भी ठोस उपलब्धि का उल्लेख नहीं करते हैं। उनके पड़ोसी राजपूत राजाओं के रिकॉर्ड में उनके साथ किसी भी संघर्ष का उल्लेख नहीं है।[5] माना जाता है कि सेन राजा लक्ष्मण सेन ने गाहड़वाल क्षेत्र पर आक्रमण किया था, लेकिन यह आक्रमण जयचंद्र की मृत्यु के बाद हुआ होगा।[6]

गोरी का आक्रमण

1193 ईस्वी में मुस्लिम मोहम्मद ग़ोरी ने जयचंद्र के राज्य पर आक्रमण किया। समकालीन मुस्लिम सूत्रों के अनुसार, जयचंद्र "जयचंद्र भारत के सबसे महान राजा और उनके पास भारत में सबसे बडे क्षेत्र पर राज किया था"।[6] इन स्रोतो ने उन्हें बनारस का राय बताया [7] अली इब्न अल-अथिर के अनुसार, उसकी सेना में दस लाख सैनिक थे और 700 हाथी थे।[8] जब जयचंद्र की सेना चलती थी, तो ऐसा प्रतीत होता था है कि एक पूरा शहर चल रहा है ना कि कोई सेना

विद्यापति के पुरुष-परीक्षा और पृथ्वीराज रासो जैसे हिन्दू स्रोतों के अनुसार ,जयचंद्र ने ग़ोरी को कई बार हराया।

कनौज के घुरिद शासक मुहम्मद ने 1192 ई, में चौहान वंश के राजा पृथ्वीराज चौहान को हराया था। हसन निज़ामी के १३ वीं शताब्दी के पाठ-ताज-उल-मासिर " के अनुसार, उन्होंने अजमेर, दिल्ली पर नियंत्रण करने के बाद गाहड़वाल वंश के राज्य पर

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

हमला करने का फैसला किया। उन्होंने कुतुब उद-दीन ऐबक द्वारा संचालित 50,000-मजबूत सेना को[4,5] भेजा। निज़ामी ने कहा कि इस सेना ने "धर्म के दुश्मनों की सेना" (इस्लाम) को हराया। ऐसा प्रतीत होता है कि पराजित सेना जयचंद्र की मुख्य सेना नहीं थी, बल्कि उनके सीमावर्ती पहरेदारों की एक छोटी संस्था थी।[9]

तब जयचंद्र ने 1194 ईस्वी में कुतुब उद-दीन ऐबक के खिलाफ एक बड़ी सेना का नेतृत्व किया। 16 वीं शताब्दी के इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार, जयचंद्र एक हाथी पर बैठे हुए थे, जब कुतुब उद-दीन ने उसे एक तीर से मार दिया था। ग़ोरी की सेनाओं ने 300 हाथियों को जिंदा पकड़ लिया, और असनी किले में गाहड़वाल खजाने को लूट लिया।[10] [11]) इसके बाद, ग़ोरी की सेनाओं ने वाराणसी के लिए आगे बढ़े, जहाॅं हसन निजामी के अनुसार, "लगभग 1000 मंदिरों को नष्ट कर दिया गया था और मस्जिदों को उनकी नींव पर खड़ा किया गया था"। ग़ोरी के प्रति अपनी निष्ठा की पेशकश करने के लिए कई स्थानीय सामंती प्रमुख सामने आए।[10]

जय चंद्र की मौत के बाद उनके पुत्र हरिश्चंद्र गाहड़वाल ने ग़ोरी की सेना को हराया, और वाराणसी को वापस अपने राज्य में ले लिया, और जितने भी मंदिर और घाट जो मुसलमानों ने तोड़े थे उन सब को वापस बनाया और जितने भी मस्जिद थे सब को नष्ट कर दिया। पर वो इतिहास में गधार माने जाते हैं

विचार-विमर्श

कनौज के राजा जयचंद चंद्र वंश के गहरवार वंश के थे। काशी के दिवोदास के कुल में राजा यशोविग्रह एक प्रसिध्द राजा हुआ। इएसने काशी से गाहर जाकर एक राज्य स्थापित किया। यह गाहर अब गढ़वा नाम से प्रसिद्ध है। जो जिला पलामु विहार में है। गाहर में रहने से यह वंश गाहवाले फिर गाहड़वाल अब गहरवार कहलाने लगे। इसी वंश में प्रसिध्द राजा महिचन्द था।इसके दौ पौत्र थे मदनपाल और चंद्रदेब से दो शाखाए चली। मदनपाल गहरवार के वंशज कन्नौज जाकर गहरवार राज्य का स्थापित किया। मदनपाल के वंशा में गोविचन्द प्रसिध्द राजा हुआ गोविचन्द के वंश [5,6]में राजा रट्टपाल या रत्तनाम हुआ जो रट्ट नाम से एक नई शाखा चलाया रट्ट के वंशज रट्टवर फिर राष्ट्वर और बाद में राठौर कहे जाने लगे इस राठौर वंश का राज्य 19 पीढ़ी राजा जैचंद तक रहा बाद में जयचन्द का पौत्र सिया जी राजस्थान में जाकर मारवाड़ में राज्य स्थापित किया जो अब तक है। जैचंद का एक कुटुम्बी भाई मानिकचंद था जो गोविचन्द के वंशजो की एक शाखा से था मानिक चंद के 20 वीं पीढ़ी पहले के पूर्वज कन्नौज से कड़ा में चले आये। जहा मानिकचंद ने अपने नाम से मानिकपुर राज्य स्थापित किया। इस वंश का राज्य विंध्याचल क्षेत्र तक फैला था। मानिकचंद के कुल में हरदेव, मलदेव, भीष्मदेव, भरथदेव, सोमदेव, चाहिरदेव्, रूपदेव, माहुलदेव, धर्मार्कदेव, मित्रदेव, पूरण मल, मालदेव, अलखदेव, जय राजदेव, तथा गुन्यदेव, आदि सोलह पीढ़ियों तक राज्य किया।गुन्यदेव के दो पुत्रों में राज्य बट गया राजा उग्रसेन अपनी राजधानी कांतिअ में बनाकर विजय पुर के राजा हुए।और भोजराय ने अपनी राजधानी मांडा में बनाकर वहां का राजा हुए।

परिणाम

कनौज के केदार ने 'जयचंद-प्रकाश' नाम का एक महाकाव्य लिखा था। जिसमें महाराज जयचंद के प्रताप और पराक्रम का विस्तृत वर्णन था[१]। इसी प्रकार का 'जयमयंक-जसचंद्रिका' नामक एक बड़ा ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है। केवल इनका उल्लेख सिंधायच दयालदास कृत 'राठौडॉ री ख्यात' में मिलता है जो बीकानेर के राजपुस्तक-भण्डार में सुरक्षित है। इस ख्यात में लिखा है कि दयालदास ने आदि से लेकर कन्नौज तक का वृत्तांत इन्हीं दोनों ग्रंथों के आधार पर लिखा है।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

इतिहासज्ञ इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के आरंभ से उत्तर भारत के दो प्रधान साम्राज्य थे। एक तो था गहरवारो (राठौरों) का विशाल साम्राज्य, जिसकी राजधानी कन्नौज थी और जिसके अंतर्गत प्रायः सारा मध्य देश, काशी से कन्नौज तक, था। दूसरा चौहानो का, जिसकी राजधानी दिल्ली थी और जिसके अंतर्गत दिल्ली से अजमेर तक का पश्चिमी प्रांत था। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन दोनो में गहरवारों का साम्राज्य अधिक विस्तृत, धन-धान्य-संपन्न और देश के प्रधान भाग पर था। गहरवारो की दो राजधानियाँ थी— कन्नौज और काशी। इसी से कन्नौज के गहरवार राजा काशिराज कहलाते थे। जिस प्रकार पृथ्वीराज का प्रभाव[6,7] राजपूताने के राजाओ पर था उसी प्रकार जयचंद का प्रभाव बुँदेलखंड के राजाओं पर था।

पृथ्वीराज का जन्म चौहान राजा सोमेश्वर और रानी कर्पूरादेवी के घर हुआ था। पृथ्वीराज और उनके छोटे भाई हरिराज दोनों का जन्म गुजरात में हुआ था जहाँ उनके पिता सोमेश्वर को उनके रिश्तेदारों ने चालुक्य दरबार में पाला था।[6] पृथ्वीराज गुजरात से अजमेर चले गए जब पृथ्वीराज द्वितीय[10,11] की मृत्यु के बाद उनके पिता सोमेश्वर को चौहान राजा का ताज पहनाया गया। सोमेश्वर की मृत्यु 1177 (1234 (वि.स.) में हुई थी। जब पृथ्वीराज लगभग 11 वर्ष के थे। पृथ्वीराज, जो उस समय नाबालिग थे ने अपनी माँ के साथ राजगद्दी पर विराजमान हुए। इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार, पृथ्वीराज ने 1180 (1237 वि°स°) में प्रशासन का वास्तविक नियंत्रण ग्रहण किया।

दिल्ली में अब खण्डहर हो चुके किला राय पिथौरा के निर्माण का श्रेय पृथ्वीराज को दिया जाता है। पृथ्वीराज रासो के अनुसार दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर ने अपने दामाद पृथ्वीराज को शहर दिया था और जब वह इसे वापस चाहते थे तब हार गए थे। यह ऐतिहासिक रूप से गलत है चूँकि पृथ्वीराज के चाचा विग्रहराज चतुर्थ द्वारा दिल्ली को चौहान क्षेत्र में ले लिया गया था।[4] इसके अलावा ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि अनंगपाल तोमर की मृत्यु पृथ्वीराज के जन्म से पहले हो गई थी। उनकी बेटी की पृथ्वीराज से शादी के बारे में दावा बाद की तारीख में किया गया है।

ग़ोरी से युद्ध

कनौज के पृथ्वीराज के पूर्ववर्तियों ने 12वीं शताब्दी तक भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों पर कब्जा करने वाले मुस्लिम राजवंशों के कई हमलों का सामना किया था। 12वीं शताब्दी के अंत तक ग़ज़नी आधारित ग़ोरी वंश ने चौहान राज्य के पश्चिम के क्षेत्र को नियंत्रित कर लिया था। 1175 में जब पृथ्वीराज एक बच्चा था, मोहम्मद ग़ोरी ने सिंधु नदी को पार किया और मुल्तान [12,13]पर कब्जा कर लिया। 1178 में उसने गुजरात पर आक्रमण किया, जिस पर चालुक्यों (सोलंकियों) का शासन था। चौहानों को ग़ोरी आक्रमण का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि गुजरात के चालुक्यों ने 1178 में कसरावद के युद्ध में मोहम्मद को हरा दिया था।[7]

अगले कुछ वर्षों में मोहम्मद ग़ोरी ने पेशावर, सिंध और पंजाब को [7,8]जीतते हुए, चौहानों के पश्चिम में अपनी शक्ति को मजबूत किया। उन्होंने अपना अड्डा ग़ज़नी से पंजाब कर दिया और अपने साम्राज्य का विस्तार पूर्व की ओर करने का प्रयास किया। इससे उन्हें पृथ्वीराज के साथ संघर्ष में आना पड़ा।[8] मध्यकालीन मुस्लिम लेखकों ने दोनों शासकों के बीच केवल एक या दो लड़ाइयों का उल्लेख किया है। तबक़ात-ए-नासिरी और तारिख-ए-फ़िरिश्ता में तराइन की दो लड़ाइयों का ज़िक्र है। जमी-उल-हिकाया और ताज-उल-मासीर ने तराइन की केवल दूसरी लड़ाई का उल्लेख किया है जिसमें पृथ्वीराज की हार हुई थी। हालांकि, हिन्दू और जैन लेखकों का कहना है कि पृथ्वीराज ने मारे जाने से पहले कई बार मोहम्मद को हराया था। जैसे कि हम्मीर महाकाव्य दावा करता है कि दोनों के बीच 9 लड़ाइयाँ हुई , पृथ्वीराज प्रबन्ध में 8 का जिक्र है, प्रबन्ध कोष 21 लड़ाइयों का दावा करता है जबकि प्रबन्ध चिंतामणि 22 बतलाता है।[9] जबकि यह लेखन संख्या को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, यह संभव है कि पृथ्वीराज के शासनकाल के दौरान ग़ोरियों और चौहानों के बीच दो से अधिक मुठभेड़ हुईं।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

तराईन का प्रथम युद्ध

कनौज के 1190–1191 के दौरान, मोहम्मद ग़ौर ने चौहान क्षेत्र पर आक्रमण किया और तबरहिन्दा या तबर-ए-हिन्द (बठिंडा) पर कब्जा कर लिया। उन्होंने इसे 1,200 घुड़सवारों के समर्थन वाले ज़िया-उद-दीन, तुलक़ के क़ाज़ी के अधीन रखा। जब पृथ्वीराज को इस बारे में पता चला, तो उसने दिल्ली के गोविंदराजा सहित अपने सामंतों के साथ तबरहिन्दा की ओर प्रस्थान किया।[14,15]

तबरहिन्दा पर विजय प्राप्त करने के बाद मुहम्मद की मूल योजना अपने घर लौटने की थी लेकिन जब उन्होंने पृथ्वीराज के बारे में सुना, तो उन्होंने लड़ाई का फैसला किया। वह एक सेना के साथ चल पड़े और तराईन में पृथ्वीराज की सेना का सामना किया।[10] आगामी लड़ाई में, पृथ्वीराज की सेना ने निर्णायक रूप से ग़ोरियों को हरा दिया।[11]

तराईन का द्वितीय युद्ध

मोहम्मद ग़ोरी ने ग़ज़नी लौटने का फैसला किया और अपनी हार का बदला लेने के लिए तैयारी की। तबक़ात-ए नसीरी के अनुसार, उन्होंने अगले कुछ महीनों में 1,20,000 चुनिंदा अफ़गान, ताजिक और तुर्क घुड़सवारों की एक सुसज्जित सेना इकट्ठा की। इसके बाद उन्होंने जम्मू के विजयराजा द्वारा सहायता से मुल्तान और लाहौर होते हुए चौहान[8,9] राज्य की ओर प्रस्थान किया।[12]

पड़ोसी हिन्दू राजाओं के खिलाफ अपने युद्धों के परिणामस्वरूप पृथ्वीराज के पास कोई भी सहयोगी नहीं था। फिर भी उन्होंने ग़ोरियों का मुकाबला करने के लिए एक बड़ी सेना[16,17] इकट्ठा करने में कामयाबी हासिल की। मोहम्मद ने अपने ग़ज़नी स्थित भाई ग़ियास-उद-दीन से राय-मशविरा लेने के लिये समय लिया।[13] फिर उन्होंने अपने बल का नेतृत्व किया और चौहानों पर हमला किया। उन्होंने पृथ्वीराज को निर्णायक रूप से हराया। पृथ्वीराज ने एक घोड़े पर भागने की कोशिश की लेकिन सरस्वती किले (संभवतः आधुनिक सिरसा) के पास उसे पकड़ लिया गया। इसके बाद, ग़ोरी ने कई हजार रक्षकों की हत्या करने के बाद अजमेर पर कब्जा कर लिया। कई और लोगों को गुलाम बना लिया और शहर के मंदिरों को नष्ट कर दिया।[14]

मृत्यु

अधिकांश मध्ययुगीन स्रोतों में कहा गया है कि पृथ्वीराज को चौहान राजधानी अजमेर ले जाया गया जहाँ मोहम्मद ने उसे ग़ोरियों के अधीन राजा के रूप में बहाल करने की योजना बनाई थी। कुछ समय बाद, पृथ्वीराज ने मोहम्मद के खिलाफ विद्रोह कर दिया जिसके उपरान्त उन्हें मार दिया गया।[14]

कनौज के पृथ्वीराज रासो का दावा है कि पृथ्वीराज को एक कैदी के रूप में ग़ज़नी ले जाया गया और अंधा कर दिया गया। यह सुनकर, कवि चंद बरदाई ने गज़नी की यात्रा की और मोहम्मद ग़ोरी को चकमा दिया जिसमें पृथ्वीराज ने मोहम्मद की आवाज़ की दिशा में तीर चलाया और उसे मार डाला। कुछ ही समय बाद, पृथ्वीराज और चंद बरदाई ने एक दूसरे को मार डाला।[15] यह एक काल्पनिक कथा है, जो ऐतिहासिक साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है: पृथ्वीराज की मृत्यु के बाद मोहम्मद ग़ोरी ने एक दशक से अधिक समय तक शासन करना जारी रखा।[14]

पृथ्वीराज की मृत्यु के बाद, ग़ोरियों ने उनके पुत्र गोविंदराज को अजमेर के सिंहासन पर राजा नियुक्त किया। 1192 में, पृथ्वीराज के छोटे भाई हरिराज ने गोविन्दराज को हटा दिया और अपने पैतृक राज्य का एक हिस्सा वापस ले लिया। गोविंदराजा रणस्तंभपुरा (आधुनिक रणथंभौर) चला गया जहाँ उसने शासकों की एक नई चौहान शाखा स्थापित की (ग़ोरी के आधिपत्य में)। बाद में हरिराज को ग़ोरियों के जनरल कुतुब-उद-दीन ऐबक ने हराया था।[16]

विरासत

पृथ्वीराज को 14वीं और 15वीं शताब्दी के प्रारंभिक संस्कृत विवरण औसत दर्जे के असफल राजा के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो केवल एक विदेशी राजा के खिलाफ अपनी हार के लिए यादगार था।[17] जैन लेखकों द्वारा लिखे गए प्रबन्ध-

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

चिंतामणि और पृथ्वीराज-प्रबन्ध उन्हें एक अयोग्य राजा के रूप में चित्रित करते हैं, जो स्वयं अपने पतन के लिए ज़िम्मेदार था।[18,19]

कनौज के प्रसिद्ध ग्रन्थ पृथ्वीराज रासो जिसको राजपूत दरबारों द्वारा बड़े पैमाने पर संरक्षण दिया गया था, पृथ्वीराज को एक महान नायक के रूप में चित्रित करता है।[17] पृथ्वीराज के वंश को बाद के काल में राजपूत वंशों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया था, हालाँकि उनके समय में "राजपूत" पहचान मौजूद नहीं थी।[18]

निष्कर्ष

समय के साथ, पृथ्वीराज को एक देशभक्त हिन्दू योद्धा के रूप में चित्रित किया गया जिसने मुस्लिम दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।[19] 16वीं शताब्दी की किंवदंतियों ने उन्हें भारत के राजनीतिक केंद्र दिल्ली (बजाय अजमेर के, जो उनकी वास्तविक राजधानी थी) का शासक बताया।[20] पृथ्वीराज को अब "अंतिम हिंदू सम्राट" के रूप में वर्णित किया गया है। यह पदनाम गलत है, क्योंकि उनके बाद दक्षिण भारत में कई मजबूत हिन्दू शासक फले-फूले और उत्तरी भारत के कुछ समकालीन हिन्दू शासक उनके जितने ही शक्तिशाली थे[10]

कनौज के पृथ्वीराज को समर्पित कई स्मारक का निर्माण अजमेर और दिल्ली में किया गया है। उनके जीवन पर कई फिल्में और टेलीविजन धारावाहिक बने हैं। इनमें हिन्दी फिल्म सम्राट पृथ्वीराज चौहान और हिन्दी टेलीविजन धारावाहिक धरती का वीर योद्धा पृथ्वीराज चौहान (2006-2009) शामिल हैं। इनमें से कई पृथ्वीराज को दोषरहित नायक के रूप में दर्शाते हैं और हिन्दू राष्ट्रीय एकता के संदेश पर जोर देते हैं।

सितंबर 2012 में घोषणा हुई कि अक्षय कुमार ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म पृथ्वीराज में इनका किरदार निभाएंगे। यह यश राज फ़िल्म्स द्वारा निर्मित की जायेगी।[11,12][20,21]

संदर्भ

1. S. Ramakrishnan, General Editor (2001). History and Culture of the Indian People, Volume 05, The Struggle For Empire. Public Resource. Bharatiya Vidya Bhavan.
2. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 102.
3. ↑ D. C. Sircar 1966, पृ° 35.
4. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 87.
5. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 103.
6. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 105.
7. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 109.
8. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ° 110.
9. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ°प° 110-111.
10. ↑ Roma Niyogi 1959, पृ°प° 111-112.
11. ↑ D. P. Dubey 2008, पृ° 231.
12. Cynthia Talbot (2012). . The Last Hindu Emperor: Prithviraj Cauhan and the Indian Past, 1200–2000. Cambridge University Press.
13. ↑ Cynthia Talbot (2012). . The Last Hindu Emperor: Prithviraj Cauhan and the Indian Past, 1200–2000. Cambridge University Press.
14. ↑ Cynthia Talbot 2012, पृ° 38.

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal Impact Factor: 1.672|

Vol. 2, Issue 7, July 2013

15. ↑ R. B. Singh 1964, पृ° 162.
16. ↑ R. B. Singh 1964, पृ° 167.
17. ↑ Dasharatha Sharma 1959, पृ° 69.
18. ↑ Dasharatha Sharma 1959, पृ°प° 80–81.
19. ↑ R. B. Singh 1964, पृ°प° 183–84.
20. ↑ R. B. Singh 1964, पृ°प° 186–88.
21. ↑ Dasharatha Sharma 1959, पृ° 82.